

❀ ज्ञान-

- 1] आते-जाते अथवा बैठते एक पंथ, दो कार्य- पहरा भी दो, बाप को भी याद करो। कर्म करते बाप को याद करते रहो। पहरे वाले को तो सबसे जास्ती फायदा है। चाहे दिन को, चाहे रात को जो पहारा देते हैं, उन्हीं के लिए बहुत फायदा है। अगर यह याद रहने की आद पड़ जाए तो। बाप ने यह सर्विस बहुत अच्छी दी है, पहरा और याद की यात्रा। यह भी चांस मिलता है बाप की याद में रहने का। यह भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बताई जाती है- याद की यात्रा में रहने की।
- 2] बाप तो सब बच्चों को कहते हैं, याद की यात्रा मुख्य है। याद से ही तुम्हारे पाप कटेंगे। भल कोई सावधान करने वाला भी नहीं हो तो भी बाप को याद कर सकते हो ना। भल विलायत में अकेले रहो, तो भी याद में रह सकते हो। समझो कोई शादी किया हुआ है, स्त्री और कोई जगह है, तो उनको भी लिख सकते हो- तुम एक बात सिर्फ याद करो- बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। विनाश सामने खड़ा है। बाप युक्तियाँ तो बहुत अच्छी समझो रहते हैं फिर कोई करे, न करे उनकी मर्जी।
- 3] कई बच्चियाँ लिखती हैं शादी के लिए बहुत तंग करते हैं, क्या करें? जो मजबूत सेन्सीबुल बच्चियाँ होंगी वह कभी ऐसे लिखेंगी नहीं। लिखती हैं तो बाबा समझ जाते हैं- रिढ़ बकरी हैं। यह तो अपने हाथ में है जीवन को बचाना। इस दुनिया में अनेक प्रकार के दुःख हैं। अब बाबा तो सहज बताते हैं।
- 4] भल भाषण में तो बहुत होशियार हैं, प्रदर्शनी भी समझा लेते हैं परन्तु याद है नहीं, इसमें फेल हो पड़ते हैं। यह भी जैसे डिसरिगार्ड करते हैं। अपना ही करते हैं, शिवबाबा का तो डिसरिगार्ड होता नहीं। ऐसे कोई कह न सके कि हमको फुर्सत ही नहीं याद करने की। बाबा मानेंगे नहीं। स्नान पर भी याद कर सकते हो। भोजन करते समय बाप को याद करो, ससमें बहुत-बहुत कमाई है। कई बच्चे सिर्फ भाषण में नामीग्रामी हैं, योग है नहीं। वह अहंकार भी गिरा देता है।
- 5] आप बच्चे मुख से वा मन से बार-बार बाबा शब्द कहते हो, बच्चे हो तो बाबा शब्द या आना या सोचना ही योग है और मुख से बार-बार कहना कि बाबा ऐसे कहते हैं, बाबा ने ये कहा- यही सेवा है। लेकिन सस बाबा शब्द को कोई दिल से कहने वाले हैं कोई नॉलेज के दिमाग से। जो दिल से कहते हैं उन्हें दिल में सदा प्रत्यक्ष प्राप्ति खुशी और शक्ति मिलती है। दिमाग वालों को बोलने समय खुशी होती सदाकाल की नहीं।

❀ योग-

- 1] मीठे बच्चे- कामकाज करते हुए भी एक बाप की याद रहे, चलते-फिरते बाप और घर को याद करो, यही तुम्हारी बहादुरी है।
- 2] जब तुम बच्चे बाप को अच्छी तरह याद करते हो तब रिगार्ड देते हो। अगर कहते याद करने की फुर्सत नहीं है तो यह भी जैसे डिसरिगार्ड है। वास्तव में यह बाप का डिसरिगार्ड नहीं करते, यह तो अपना ही डिसरिगार्ड करते हो इसलिए नामीग्रामी केवल भाषण में नहीं लेकिन याद की यात्रा में बनो, याद का चार्ट रखो। याद सेही आत्मा सतोप्रधान बनेगी।
- 3] बाप कहते हैं इस ज्ञान से भी ऊंच बात है याद की यात्रा, जिसको योग कहा जाता है। योग अक्षर मशहूर है। परन्तु यह है याद की यात्रा।
- 4] बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करना है। देखने की तो चीज नहीं। न मालूम पड़ सकता है। यह उस अवस्था में कहाँ तक याद की यात्रा में कायम रहते हैं, यह तो कुद ही जानें। युक्ति तो बहुतों को बताते हैं। कल्याणकारी बाप ने समझाया है- अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो।
- 5] एकान्त में जितना बाप को याद करेंगे उतना अच्छा है। याद से पाप कटते हैं। जन्म जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। जो पहले सतोप्रधान बनते हैं, रामराज्य में भी पहले वह जाते हैं। तो उनको ही सबसे जास्ती याद की यात्रा में रहना है। कल्प-कल्प की बात है। तो इनको याद की यात्रा में रहने का अच्छा चांस है। यहाँ तो कोई लड़ाई-झगड़े की बात ही नहीं है।

[2]

- 6] यहाँ तुम जितना याद में रह सकेंगे उतना बाहर धन्धे आदि में नहीं इसलिए मधुबन में आते हैं रिफ्रेश होने। एकान्त में जाकर एक पहाड़ी पर बैठ याद की यात्रा में रहे फिर एक जाए व 2-3 जायें। यहाँ चांस बहुत अच्छा है। यही मुख्य है बाप की याद।
 - 7] बाप कहते हैं सिर्फ याद की यात्रा में रहो। जितना हो सके रात को बहुत अच्छा है। भल लेटे हुए याद करो। कोई को फिर नींच आ जाती है। बुढ़ा होगा, जास्ती बैठ नहीं सकेगा तो जरूर सो जायेगा। लेटे हुए बाप को याद करते रहेंगे। बड़ी खुशी अन्दर में होती रहेगी क्योंकि बहुत-बहुत कमाई है। यह तो समझते हैं— टाइम पड़ा है परन्तु मौत का कोई ठिकाना नहीं। तो बाप समझाते हैं मूल है याद की यात्रा।
 - 8] कर्म करते हुए याद करो, इसमें बहुत-बहुत फायदा है। सवेरे आकर याद में बैठो। बहुत मज़ा आयेगा।
-

❀ धारणा-

- 1] तो तुम बच्चों को भी बड़ा प्रेम से बाप और घर को याद करना है। यह मंजिल बड़ी भारी है।
 - 2] अभी तुम समझते हो इस याद की यात्रा से पाप कटते हैं। हम सतोप्रधान बन जायेंगे। तो इसमें पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना है, बहादुरी तो इसमें है जो काम करते बाप को याद कर दिखलाओ। कर्म तो करना ही है क्योंकि तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले। गृहस्थ व्यवहार में रहते धन्धा आदि करते बुद्धि में बाप की याद रहे, इसमें तुम्हारी बहुत-बहुत कमाई है। भल अभी कई बच्चों की बुद्धि में नहीं आता है। बाप कहते रहते हैं चार्ट रखो। थोड़ा बहुत कोई लिखते हैं। बाप युक्तियाँ तो बहुत बताते हैं। बच्चे चाहते हैं बाब के पास जायें। यहाँ बहुत कमाई कर सकते हैं। एकान्त बहुत अच्छी है। बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जायें क्योंकि जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। विकार के लिए कितने झगड़े चलते हैं, विघ्न पड़ते हैं। कहते हैं बाबा हमको पवित्र रहने नहीं देते।
 - 3] बाप कहते हैं— बच्चे, तुम याद की यात्रा में रह जन्म-जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं, वह बोझा उतारो। घर बैठे शिवबाबा को याद करते रहो। याद तो कहाँ भी बैठ कर सकते हो। **कहाँ भी रहते यह प्रैक्टिस करनी है।**
-

❀ सेवा-

- 1] **जो भी आये उनको पैगाम दो।** बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इनको ही योगबल कहा जाता है। बल माना ताकत, शक्ति। बाप को सर्वशक्तिमान् कहते हैं ना। तो वह शक्ति बाप से कैसे मिलेगी? बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। तुम नीचे उतरते-उतरते तमोप्रधान बन गये हो तो वह शक्ति बिल्कुल खत्म हो गई है। पोई की भी नहीं रही है। तुम्हारे में भी कोई है जो अच्छी रीति समझाते हैं, बाप को याद करते हैं।
 - 2] हमारा काम है मित्र-सम्बन्धी आदि जो भी मिलें, सबको पैगाम देना। दोस्त हो या कोई भी हो, सर्विस का शौक चाहिए। तुम्हारे पास चित्र तो हैं, बैज भी है। यह बड़ी अच्छी चीज़ है। बैज किसको भी लक्ष्मी-नारायण बना सकता है। त्रिमूर्ति के चित्र पर अच्छी तरह समझाना है, इनके ऊपर शिव है। वो लोग त्रिमूर्ति बनाते हैं, ऊपर में शिव दिखाते नहीं। शिव को न जानने कारण भारत का बेड़ा डूबा हुआ है। अब शिवबाबा द्वारा ही भारत का बेड़ा पार होता है। पुकारते हैं पतित-पावन आकर हम पतितों को पावन बनाओ फिर भी सर्वव्यापी कह देते हैं। कितनी पाई पैसे की भूल है; बाप बैठ समझाते हैं तुमको ऐसे-ऐसे भाषण करना है।
 - 3] बाप भी डायरेक्शन देते रहते हैं— ऐसे म्यूज़ियम खोले, सर्विस करो तो बहुत आयेंगे। सर्कस भी बड़े-बड़े शहरों में खोलते हैं ना। कितना उन्हीं के पास सामान रहता है। गाँव-गाँव से देखने के लिए लोग आते हैं इसलिए बाबा कहते हैं तुम भी ऐसा खूबसूरत म्यूज़ियम बनाओ, जो देखकर खुश हो जायें फिर औरों को जाकर सुनायें।
-